भारत में दलीय प्रणाली की समीक्षा

रजनी वर्मा[1], डॉ. अनामिका रावत[2]

[1]शोधार्थी, राजनीतिक शास्त्र, भाभा विश्वविद्यालय, भोपाल.
[2]गाइड, राजनीतिक शास्त्र, भाभा विश्वविद्यालय, भोपाल.

OPEN ACCESS

Volume: 3

Issue: 2

Month: June

Year: 2024

ISSN: 2583-7117

Published: 14.06.2024

Citation:

रजनी वर्मा**1,** डॉ. अनामिका रावत**2,** "भारत में दलीय प्रणाली की समीक्षा" International Journal of Innovations In Science Engineering And Management, vol. 3, no. 2, 2024, pp. 61–66.

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Share Alike 4.0 International License

सारांश

भारत में दलीय प्रणाली इसके लोकतांत्रिक ढांचे की आधारशिला के रूप में खड़ी है, जो 1947 में अपनी आजादी के बाद से देश के राजनीतिक परिदृश्य और शासन की गतिशीलता को गहराई से आकार दे रही है। यह समीक्षा पत्र भारत में दलीय प्रणाली के विकास, विशेषताओं और महत्व की जांच करता है, जो मौजूदा साहित्य के व्यापक विश्लेषण पर आधारित है। यह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रभुत्व से लेकर बहुदलीय प्रणाली और गठबंधन राजनीति के उद्भव तक, भारत में दलीय राजनीति के ऐतिहासिक विकास की गहराई से पड़ताल करती है। यह पेपर भारतीय दलीय प्रणाली की प्रमुख विशेषताओं की पड़ताल करता है, जिसमें पार्टियों की बहुलता, क्षेत्रीय प्रभुत्व, गठबंधन निर्माण, वैचारिक विविधता और पहचान की राजनीति की भूमिका शामिल है। पिछले शोध और विद्वतापूर्ण प्रवचन का आलोचनात्मक मूल्यांकन करके, यह पेपर भारत में दलीय प्रणाली की जटिलताओं और बारीकियों में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जो भारतीय राजनीतिक गतिशीलता और लोकतांत्रिक शासन की गहरी समझ में योगदान देता है।

सूचक शब्द: दलीय प्रणाली, शासन, भारतीय राजनीतिक दल, स्वतंत्रता के बाद और स्वतंत्रता-पूर्व।

प्रस्तावना

भारत में दलीय प्रणाली इसके लोकतांत्रिक ढांचे की आधारशिला के रूप में कार्य करती है, जो **1947** में अपनी आजादी के बाद से देश के राजनीतिक परिदृश्य और शासन की गतिशीलता को गहराई से आकार देती है।

इसकी विशेषता विभिन्न विचारधाराओं, सामाजिक समूहों और क्षेत्रीय हितों का प्रतिनिधित्व करने वाले राजनीतिक दलों की एक समृद्ध चित्रयवनिक है, जो भारत के विशाल और विषम समाज की जटिलताओं को दर्शाती है। इसके मूल में, भारतीय दलीय प्रणाली एक बहुलवादी प्रकृति का प्रदर्शन करती है, जहां कई पार्टियां एक लोकतांत्रिक ढांचे के भीतर सह-अस्तित्व में रहती हैं और सत्ता के लिए प्रतिस्पर्धा करती हैं, जो कुछ अन्य लोकतंत्रों में प्रचलित दो-पक्षीय प्रणालियों के बिल्कुल विपरीत है। राष्ट्रीय दिग्गजों से लेकर क्षेत्रीय ताकतवरों तक, ये पार्टियाँ अलग-अलग स्तर का प्रभाव और चुनावी समर्थन रखती हैं, जो जनता की विविध आकांक्षाओं को मूर्त रूप देती हैं। भारत की दलीय प्रणाली की जड़ें स्वतंत्रता-पूर्व युग में खोजी जा सकती हैं, जब राजनीतिक संगठन जनता का समर्थन जुटाने और स्व-शासन की मांगों को व्यक्त करने के माध्यम के रूप में उभरे थे, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आईएनसी) स्वतंत्रता के बाद प्रमुख शक्ति के रूप में उभरी थी। हालाँकि, स्वतंत्रता के बाद के दशकों में भारतीय राजनीति के परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया, जिसमें भाषाई और सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक आंदोलनों और आर्थिक असमानताओं जैसे कारकों के कारण बहुदलीय प्रणाली में क्षेत्रीय और वैचारिक दलों का प्रसार देखा गया। आज, भारत की दलीय प्रणाली कांग्रेस और भारतीय जनता दलीय (भाजपा) जैसी राष्ट्रीय स्तर की पार्टियों के साथ-साथ अपने-अपने राज्यों में मजबूत पकड़ वाले असंख्य क्षेत्रीय दलों के बीच शक्ति के एक नाजुक संतुलन को दर्शाती है। हालाँकि यह विविधता भारत की संघीय संरचना और सांस्कृतिक बहुलवाद को प्रतिबिंबित करती है, लेकिन यह गठबंधन की राजनीति, नीति विखंडन और शासन प्रभावशीलता जैसी चुनौतियाँ भी पेश करती है।

1.1. भारत में दलीय प्रणाली का ऐतिहासिक विकास

भारत में दलीय प्रणाली के विकास का पता स्वतंत्रता-पूर्व युग से लगाया जा सकता है, जब राजनीतिक संगठन राष्ट्रवादी लामबंदी और औपनिवेशिक शासन के खिलाफ संघर्ष के माध्यम के रूप में उभरे थे, 1885 में स्थापित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आईएनसी) ने महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में स्वतंत्रता के लिए जनता का समर्थन जुटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता के बाद, सामाजिक-राजनीतिक विकास और राष्ट्र-निर्माण की चुनौतियों से प्रभावित होकर महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। स्वतंत्रता के लिए संघर्ष का नेतृत्व करने के बाद, कांग्रेस ने सत्तारूढ़ दल के रूप में सत्ता संभाली और गणतंत्र के शुरुआती वर्षों में आधिपत्य प्रभुत्व का आनंद लिया, लेकिन 1960 और 1970 के दशक में कांग्रेस के एकाधिकार को चुनौती देने वाले विपक्षी दलों के उद्भव के साथ परिदृश्य में विविधता आ गई। 1967 के आम चुनावों ने एक महत्वपूर्ण क्षण को चिह्नित किया, जिसने कांग्रेस के आधिपत्य के विखंडन और भाषाई और सांस्कृतिक पहचान की वकालत करने वाले क्षेत्रीय दलों के उदय का संकेत दिया। 1990 के दशक में राष्ट्रीय स्तर पर गठबंधन की राजनीति के उद्भव के साथ और अधिक विखंडन देखा गया, जिससे गठबंधन-निर्माण और आम सहमति की राजनीति की संस्कृति को बढ़ावा मिला, हालांकि अस्थिरता की अवधि के साथ। हाल के वर्षों में, भारतीय दलीय प्रणाली में नई राजनीतिक ताकतों का उदय हुआ है, विशेष रूप से भारतीय जनता दलीय

(भाजपा), कांग्रेस के आधिपत्य को चुनौती देना और भारतीय राजनीति की रूपरेखा को नया आकार देना, प्रतिस्पर्धी राजनीति और वैचारिक ध्रुवीकरण के युग की शुरुआत करना, विशेष रूप से नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में।

1.2. भारतीय दलीय प्रणाली की विशेषताएं

भारतीय दलीय प्रणाली की विशेषता विभिन्न विचारधाराओं, हितों और क्षेत्रीय संबद्धताओं का प्रतिनिधित्व करने वाली पार्टियों की बहुलता है, साथ ही राज्य स्तर पर राजनीति को आकार देने में क्षेत्रीय दलों की प्रमुख भूमिका है। गठबंधन की राजनीति एक सामान्य घटना है, जो एकल-दल के प्रभुत्व की अनुपस्थिति के कारण आवश्यक हो जाती है, जिससे जटिल सत्ता-साझाकरण व्यवस्था और गठबंधन होते हैं। भारतीय राजनीति का वैचारिक परिदृश्य एक व्यापक स्पेक्ट्रम तक फैला हुआ है, जिसमें धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद से लेकर राष्ट्रवाद और क्षेत्रवाद तक की पार्टियाँ अक्सर वैचारिक सिद्धांतों के कड़ाई से पालन के बजाय व्यावहारिक विचारों के आधार पर गठबंधन बनाती हैं। वंशवादी उत्तराधिकार प्रचलित है, जिसमें राजनीतिक परिवार अपनी पार्टियों के भीतर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं, जबकि चुनाव प्रचार को जीवंत रैलियों, बड़े पैमाने पर लामबंदी के प्रयासों और मीडिया और प्रौद्योगिकी के व्यापक उपयोग द्वारा चिह्नित किया जाता है। पहचान-आधारित लामबंदी, विशेष रूप से जाति, धार्मिक और जातीय आधार पर, चुनावों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि दलें विशिष्ट जनसांख्यिकीय समूहों से अपील करना चाहती हैं। हालाँकि, भारत के संसदीय लोकतंत्र के भीतर सरकार को जवाबदेह बनाए रखने और वैकल्पिक नीतियों को स्पष्ट करने में विपक्ष द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका के साथ-साथ धन शक्ति, बाहुबल, अस्थिरता और विखंडन जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

1.3. दलीय प्रणाली और शासन

भारतीय दलीय प्रणाली शासन, नीति-निर्माण प्रक्रियाओं को आकार देने और लोकतांत्रिक संस्थानों के कामकाज को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सत्ता और प्रतिनिधित्व के लिए प्रतिस्पर्धा करने वाली कई दलों के साथ, गठबंधन की राजनीति एक आदर्श बन गई है, खासकर राष्ट्रीय स्तर पर, विभिन्न हितधारकों के बीच आम सहमति बनाने और समझौते की आवश्यकता होती है। सत्तारूढ़ दल या गठबंधन की समर्थन जुटाने और स्थिरता बनाए रखने की क्षमता अक्सर शासन की पहल और नीतियों के कार्यान्वयन की प्रभावशीलता को निर्धारित करती है। हालाँकि, दलीय प्रणाली का विखंडन, गठबंधन की गतिशीलता और क्षेत्रीय दलों के प्रभाव के साथ मिलकर, कभी-कभी नीतिगत गतिरोध और शासन चुनौतियों का कारण बन सकता है। इसके अतिरिक्त, पारदर्शिता, जवाबदेही और लोकतांत्रिक कामकाज सुनिश्चित करने के लिए सरकार को जवाबदेह ठहराने, उसके कार्यों की जांच करने और वैकल्पिक नीति प्रस्ताव प्रदान करने में विपक्षी दलों की भूमिका महत्वपूर्ण है। राजनीतिक ध्रुवीकरण, वंशवादी राजनीति और चुनावी कदाचार जैसी अंतर्निहित चुनौतियों के बावजूद, भारतीय दलीय प्रणाली देश के लोकतांत्रिक लोकाचार के केंद्र में बनी हुई है, जो शासन प्रक्रिया में अपने नागरिकों की विविध आवाज़ों और आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करती है।

1.4. साहित्य समीक्षा

साहित्य समीक्षा भारत में राजनीतिक व्यवस्था की विशिष्ट प्रकृति और गतिशीलता की पड़ताल करती है,

जो इसकी अद्वितीय बहुदलीय संरचना की विशेषता है। जबकि भारतीय राजनीति प्रकट रूप से एक बहुदलीय प्रणाली का प्रतिनिधित्व करती है, केंद्र में कांग्रेस दलीय के ऐतिहासिक प्रभुत्व ने आधुनिक भारत के चुनावी इतिहास की एक महत्वपूर्ण अवधि के लिए राजनीतिक परिदृश्य को आकार दिया। हालाँकि, 1970 के दशक के बाद से, भारतीय राजनीति में केंद्र और राज्य दोनों स्तरों पर बढ़ती प्रतिस्पर्धात्मकता की ओर बदलाव देखा गया है, जिसने राजनीतिक दलों को तरलता के चरण से संरचनात्मक समेकन के चरण में संक्रमण के लिए प्रेरित किया है। इस विकास में विविध राजनीतिक संरचनाओं और हितों का प्रसार देखा गया है, जिसकी परिणति सामाजिक इंजीनियरिंग के विशिष्ट रूपरेखा के साथ पूर्ण रूप से विकसित राजनीतिक दलों के उद्भव में हुई है। 1989 के बाद से एक उल्लेखनीय विकास खंडित जनादेशों का प्रचलन रहा है, जिसके परिणामस्वरूप त्रिशंकु संसद और बहुदलीय गठबंधन का उदय हुआ। राजनीतिक व्यवस्था की उभरती प्रोफ़ाइल की जांच करके, साहित्य समीक्षा राष्ट्रीय स्तर पर एकल-दलीय गठबंधनों के गठन और विभिन्न राज्यों में बहु-दलीय गठबंधनों के उद्भव की जांच करती है, यह सरकार में एकल-दलीय प्रभुत्व के युग से एक महत्वपूर्ण प्रस्थान का प्रतीक है। [1]

यह अध्ययन राजनीतिक व्यवस्था के भीतर तुलनात्मक विश्लेषण पर विशेष जोर देने के साथ, भारत गणराज्य के भीतर राजनीतिक दलों की संगठनात्मक संरचना और कार्यप्रणाली की खोज पर केंद्रित है। यह केंद्र और राज्य दोनों स्तरों पर सरकार गठन में राजनीतिक दलों के परिचालन तंत्र, शक्ति की गतिशीलता और कार्यात्मक भूमिकाओं की जांच करना चाहता है। इसके अलावा, समीक्षा विभिन्न प्रांतीय प्रशासनों में गठबंधन सरकारों के गठन में प्रमुख अभिनेताओं के रूप में राजनीतिक दलों द्वारा अपनाई गई रणनीतियों की जांच करती है। तुलनात्मक पद्धतिगत दृष्टिकोण को नियोजित करते हुए, समीक्षा अनुसंधान उद्देश्यों को पूरा करने के लिए उपयोग की जाने वाली पद्धतियों और स्रोतों की रूपरेखा तैयार करती है। मौजूदा साहित्य के विश्लेषण के माध्यम से, समीक्षा भारतीय राजनीतिक परिदृश्य के भीतर राजनीतिक दलों के व्यापक महत्व पर प्रकाश डालती है। अंततः, यह निष्कर्ष निकलता है कि भारत में बहुदलीय प्रणाली नागरिक जुड़ाव और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भागीदारी के लिए व्यापक अवसर प्रदान करती है। [2]

भारत की दलीय राजनीति के इतिहास की खोज देश की दलीय प्रणाली का आलोचनात्मक विश्लेषण करने के लिए एक उर्वर भूमि प्रदान करती है। किसी राष्ट्र के राजनीतिक ढांचे के भीतर राजनीतिक दलों के बीच जटिल अंतरसंबंध के रूप में परिभाषित, यह प्रणाली दलीय संख्या, शक्ति गतिशीलता और वैचारिक रुख जैसे विविध तत्वों को शामिल करती है। ऐतिहासिक रूप से, भारत की दलीय प्रणाली पर अनुसंधान मुख्य रूप से प्ररूपविज्ञान और तुलनात्मक विश्लेषणों के इर्द-गिर्द घूमता है, जो विद्वानों के प्रवचन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। हालाँकि, 1980 के दशक के उत्तरार्ध से, भारत की बहुदलीय प्रणाली की जाँच की दिशा में एक स्पष्ट बदलाव आया है, जो परीक्षा के लिए एक जटिल और बहुआयामी विषय प्रस्तुत करता है। इस आलोचनात्मक साहित्य समीक्षा का उद्देश्य 1980 के दशक के उत्तरार्ध से भारत की दलीय प्रणाली

के विकास में गहराई से उतरना है, जो भारतीय राजनीतिक परिदृश्य के भीतर बदलती गतिशीलता और उभरते रुझानों में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। [3]

उभरते लोकतंत्रों में राजनीतिक दलों को लेकर चर्चा सर्वोपरि है, जो लोकतांत्रिक प्रणालियों की स्थापना और रखरखाव में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करती है। विद्वान लंबे समय से शासन को मजबूत करने की प्रक्रियाओं में उनके महत्व को पहचानते हुए, नए लोकतंत्रों में राजनीतिक दलों के संस्थागतकरण और स्थिरता की वकालत करते रहे हैं। जैसा कि रॉबर्ट डिक्स का तर्क है, नाजुक नए लोकतंत्रों को बनाए रखने के लिए दलीय प्रणालियों का संस्थागतकरण महत्वपूर्ण है। हालाँकि, हाल के रुझानों से सत्ता-विरोधी भावनाओं में वृद्धि का संकेत मिलता है, जिससे राजनीतिक दलों पर व्यापक हमले हो रहे हैं और उन्हें "पुरानी राजनीति" का प्रतीक माना जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप दलीय प्रणालियों के भीतर विखंडन बढ़ गया है। विद्वानों ने राजनीतिक दलों की अनुपस्थिति में लोकतंत्र की व्यवहार्यता पर भी सवाल उठाया है। यह पेपर लोकतांत्रिक कार्यप्रणाली में राजनीतिक दलों की अपरिहार्यता को स्पष्ट करने का प्रयास करता है, विशेष रूप से उभरते लोकतंत्रों के लिए स्थिरता सुनिश्चित करने में। यह उभरते लोकतंत्रों में लोकतांत्रिक शासन और स्थिरता को बढ़ावा देने में मजबूत दलीय प्रणालियों के महत्वपूर्ण महत्व को रेखांकित करता है। [4]

भारत का विशाल भौगोलिक विस्तार, इसके विविध सामाजिक ताने-बाने, सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार को अपनाना और इसकी राजनीतिक प्रक्रियाओं की अनूठी प्रकृति ने कई राजनीतिक दलों के प्रसार में योगदान दिया है। वास्तव में, भारत विश्व स्तर पर सबसे बड़ी संख्या में राजनीतिक दलों का दावा करता है। 2019 में सत्रहवीं लोकसभा आम चुनाव के अनुसार, देश 7 राष्ट्रीय पार्टियों, 52 राज्य पार्टियों और 2354 पंजीकृत गैर-मान्यता प्राप्त पार्टियों का घर था। यह विविधता वैचारिक वर्णक्रम तक फैली हुई है, जिसमें वामपंथी, मध्यमार्गी, दक्षिणपंथी, सांप्रदायिक और गैर-सांप्रदायिक दल शामिल हैं। परिणामस्वरूप, भारतीय राजनीति में त्रिशंकु संसद, त्रिशंकु विधानसभाएं और गठबंधन सरकारें जैसी स्थितियां आम हो गई हैं। इस पेपर में, लेखक राजनीतिक दलों पर मौजूदा साहित्य की आलोचनात्मक समीक्षा करते हैं, जिसका उद्देश्य भारत की जीवंत दलीय प्रणाली की जटिलताओं और गतिशीलता के बारे में जानकारी प्रदान करना है। [5]

निष्कर्ष

भारत में दलीय प्रणाली की समीक्षा देश के लोकतांत्रिक परिदृश्य को आकार देने में इसके महत्वपूर्ण महत्व पर प्रकाश डालती है। आजादी के बाद से, भारतीय दलीय प्रणाली में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं, जो एकल-दलीय प्रभुत्व से गठबंधन राजनीति और क्षेत्रीय विविधता की विशेषता वाले बहु-दलीय ढांचे में विकसित हुई है। पहचान-आधारित लामबंदी के उद्भव के साथ-साथ पार्टियों की बहुलता ने जटिल चुनावी गतिशीलता को जन्म दिया है, जिसमें खंडित जनादेश और गठबंधन सरकारें शामिल हैं। राजनीतिक विखंडन और गठबंधन शासन जैसी चुनौतियों के बावजूद, भारतीय दलीय प्रणाली जनता की विविध आकांक्षाओं और हितों को प्रतिबिंबित करते हुए लचीली बनी हुई है। आगे बढ़ते हुए, भारत की लोकतांत्रिक संस्थाओं को मजबूत करने और राजनीतिक स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए

दलीय संस्थागतकरण, चुनाव सुधार और शासन प्रभावशीलता के मुद्दों को संबोधित करना अनिवार्य है। दलीय प्रणाली की जटिलताओं को समझने और संबोधित करने से, भारत अपने नागरिकों के लिए एक जीवंत और भागीदारीपूर्ण राजनीतिक माहौल को बढ़ावा देकर, लचीलेपन और समावेशिता के साथ अपनी लोकतांत्रिक यात्रा जारी रख सकता है।

संदर्भ

[1] P. C. Swain, “DYNAMICS OF THE INDIAN PARTY SYSTEM : THE EMERGENCE OF COMPETITIVE MULTI PARTY COALITIONS,” indian J. Polit. Sci., vol. 69, no. 1, 2017.

[2] एम. एस. भारती, "भारत में दलीय प्रणाली की गतिशीलता: राष्ट्रीय और क्षेत्रीय पार्टियों का एक तुलनात्मक अध्ययन," Przegląd Politol., no. 2, pp. 79–89, 2022, doi: 10.14746/pp.2022.27.2.6.

[3] H. Miwa, “The Transition of Party System in India: From Polarized Pluralism to Moderate Pluralism,” J. Japanese Assoc. South Asian Stud., pp. 96–116, 2006.

[4] N. M. Ezrow, “The Importance of Parties and Party System Institutionalization in New Democracies,” Econ. Outlook, vol. 10, no. 1, pp. 28–35, 1985, doi: 10.1111/j.1468-0319.1985.tb00102.x.

[5] आर. कोठारी, "भारतीय दलीय प्रणाली की विशेषताएं," pp. 1–3, 2019.